।। श्री गौतम गणधराय नमः ।।

जानिए सम्यक् दीपावली

कविहृदय - सिद्धान्तज्ञ

उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

कृति

जानिए
सम्यक् दीपावली

शुभाशीष

आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज

सप्तमावृत्ति तक	-	12000
अष्टमावृत्ति	-	2000 भिण्ड
नवमावृत्ति	-	

प्राप्ति स्थान : धर्म प्रभावना ट्रस्ट भिण्ड मो. 09826801542

सौजन्य से :

कम्प्यूटर डिजाइन एवं मुद्रक :- मुकेश जैन 9414555103

आर्यन एजेन्सीज

इन्दिरा बाजार, अजमेरी गेट, जयपुर

(सर्वाधिकार सुरक्षित) ©

पहले इसे देखें

दीपावली पर्व सम्पूर्ण देश व सभी समाजों में बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है, धर्म का दीपावली से कितना गहरा संबंध है इस बात का पता हमारी समाज को अब चला है। कई लोग दीपावली को रूढ़िवादिता की तरह मानते चले आ रहे हैं। जिसका धर्म से कोई संबंध नहीं है। यह रूढ़िवादिता मात्र सत्य ज्ञान के अभाव के कारण हम सभी अपना रहे हैं, कोई महावीराष्टक शाम को पढ़ते हैं कोई निर्वाण काण्ड पढ़ने लगते हैं, तो कोई धन की पूजा करते हैं आदि जबकि दीपावली श्री गौतम गणधर भगवान की वजह से मनायी जाती है।

परम गुरुदेव जैनाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज के शुभाशीष से कविहृदय सिद्धान्तज्ञ भक्तामर वाले बाबा प.पू. उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज का ससंघ वर्षायोग हमें भिण्ड नगर में प्राप्त हुआ। इस वर्षायोग में अद्वितीय भक्तामर शिविर व पूजन शिविर को हम सभी ने आत्मसात् किया। समाज में नब्बे नहीं पिंचानवे प्रतिशत लोग सम्यक् रीति से दीपावली नहीं मनाते। आश्चर्य की बात यह है कि सही रीति कोई बताता भी नहीं है। सही रीति से दीपावली मनाने की विधि जानना आवश्यक है इसीलिए.........

''जानिये सम्यक् दीपावली'' यह पुस्तक अपने आप में एक अद्वितीय है, जिसमें दीपावली की पूर्ण विधि सम्यक् प्रकार से दी गई है। मुनिश्री ने समाज के अत्यन्त अनुग्रह पर यह पुस्तक को करुणावश लिखा है, हमारी समाज इस करुणा के लिए हमेशा ऋणी रहेगी एवं आचार्य श्री ने जो ज्ञान दान हमारी समाज को दिया शायद उसका ऋण हमारी समाज कभी चुका न सकेगी। ऐसे स्व-परोपकारी गुरुवरों के चरणों में श्रद्धा भक्ति सहित कोटि - कोटि विनम्र नमन्।

आ. विनम्रसागर वर्षायोग समिति, भिंड

इसे जरूर पढ़ें

दीपावली भारत देश का सबसे अच्छा एवं पवित्र त्यौंहार माना जाता है।इस त्यौहार पर सभी को अत्यन्त उत्साह होता है। कई लोग यह कहते हैं कि दीपावली के दिन रामचन्द्र जी रावण पर विजय प्राप्त करके लौटे थे लेकिन यह भ्रामक है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री के शास्त्रों के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि रामचन्द्र जी ने रावण पर चैत्रमास में विजय प्राप्त की थी और उनका अयोध्या में आगमन वैशाख मास में हुआ था इसका दीपावली से कोई संबंध नहीं है।

श्री कृष्ण जी ने नरकासुर को मारा था। भगवती दुर्गा देवी इस दिन अपने पति गृह गईं थी। तीन सौ पचास वर्ष पूर्व सिक्खों के गुरु हरगोविन्दसिंह जी मुगल बादशाह की कैद से छूटे थे। पंचानवे वर्ष पूर्व स्वामी दयानन्द सरस्वती ने व स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने शरीर त्याग किया था। इस प्रकार अलग-अलग सम्प्रदायों में अलग-अलग मान्यताएँ निहित हैं।

अर्वाचीन जैन धर्म के शास्त्रों से यह ज्ञात होता है कि भगवान महावीर ने कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को समवशरण त्यागकर योग निरोध करने के लिए श्रेणी पर (शुक्ल ध्यान) आरूढ़ होकर कार्तिक कृष्ण अमावस्या की प्रातः बेला में निर्वाण को प्राप्त किया जिसके उत्सव में भगवान महावीर की बहुत धूमधाम से पूजा हुई तथा निर्वाण लाडू को चढ़ाया गया। भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण होने पर महानुरागी गौतम गणधर जी महाराज को उनका वियोग सहन न हुआ और वे भी शुक्ल ध्यान की श्रेणी में पुरुषार्थरत् हो गये, लगभग 12 घण्टे बाद संध्या बेला में उन्हें भी केवल ज्ञान ज्योति प्राप्त हुई, वह ज्योति हमें भी प्राप्त हो इस खुशी को व्यक्त करने के लिए हम सभी शाम को ज्योतिर्मय दीपक जलाते हैं और यह भावना करते हैं, ऐसी ही ज्ञान की ज्योति हमारे अन्दर जले व सुख प्राप्त हो।

इस पर्व पर क्या घर दुकानों की सफाई करना उचित है ? क्या बही बदलना उचित है ? क्या् जुआ खेलना उचित है ? क्या लक्ष्मी पूजन करना रूढ़िवादिता है ? कुछ लोग पटाखे आदि बारूद चलाते हैं - यह उचित है ? तो समझिए घर - दुकान की सफाई का मतलब था जो अतीत की उम्र में कषायों - भोगों - विषयों में आसक्ति करने से आत्मा के घर में बहुत कचरा भर गया है, उसे बाहर निकालो और व्यापार चर्या बदलो। जहाँ बही बदलने को कहा था वहाँ अपने जीवन का हिसाब लगाओ और देखो पाप हुआ या धर्म। यदि पाप हुआ तो पुण्य से बदल डालो, यदि पुण्य हुआ है तो और अधिक कोष बढ़ाओ। जुआ खेलने का मतलब है जो भी तुम्हारे पास है, वह सब कुछ दाँव पर लगा दो केवल ज्ञान पाने के लिए और महावीर स्वामी की तरह

दाँव पे लगाकर अपना वैभव जीतो। लक्ष्मी पूजन का मतलब है कि केवल ज्ञान लक्ष्मी। मोक्ष लक्ष्मी को पूजना चाहिए न कि कर्मों की दासी धन लक्ष्मी को। ध्यान रहे पटाखे चलाने का मतलब है कि कर्मरुपी पटाखे फोड़ो जिससे मुक्ति मिले। पटाखे चलाने वाला शेर से भी ज्यादा हिंसक होता है, ऐसा व्यक्ति सम्यक् दृष्टि नहीं हो सकता तथा भगवान महावीर को मानने वाला हो ही नहीं सकता, वह नाम का भी जैन नहीं हो सकता।

वास्तविक दीपावली वही अपना सकता है, जिसके अन्दर भगवान महावीर का कुछ अंश विद्यमान है। वह मिथ्यात्व का पोषण नहीं कर सकता इसीलिए हमें रुपयों पैसों की कभी पूजा नहीं करना चाहिए। दीपावली के दिन शाम की बेला में सरस्वती देवी (जिनवाणी) व श्री गौतम गणधर जी की पूजा अष्ट दरब से करना चाहिए जो युक्ति आगम से पूर्णतः सिद्ध है।

समझें समीचीन दीपावली

वर्ष में एक बार आने वाला अत्यन्त उत्साह का दिन यह दीपावली का दिन है। वर्ष में एक यही दिन है जिस दिन हम अपने सम्पूर्ण परिवार सहित अष्टद्रव्य से घर पर सामूहिक पूजन करते हैं, शेष 364 दिन में ऐसा नहीं कर पाते हैं।

दीपावली के दिन सुबह सर्वप्रथम 4.00 बजे ब्रह्ममुहुर्त में उठें, शुद्धिकरण करके भगवान महावीर का चिन्तन करें, महावीराष्टक अन्य स्तुति पढ़ें तत्पश्चात् शुद्ध वस्त्र पहिनकर अष्ट द्रव्य लेकर मन्दिर जी में जाकर धूमधाम से उत्साहपूर्वक देव शास्त्र गुरु व भगवान महावीर की पूजन करें, तत्पश्चात् लाडू चढ़ावें उसके बाद स्वाध्याय करें, चिन्तन करें, उसके बाद यदि साधु समागम हो तो आहार दान देवें, तत्पश्चात् शुद्ध भोजन करें।

संध्याकाल में पूर्व या उत्तर दिशा की ओर तीन फुट ऊँची चौकी पर आर्षमार्गी शास्त्रों को नये अच्छे वेत्रासन चढ़ाकर विराजमान करें, लगभग 4 बजे घर का मुखिया शुद्ध वस्त्र पहिनकर अष्ट द्रव्य बनाकर थालियों में लगाएं, सभी लोगों से शुद्ध कपड़े पहिनने को कहें, जहाँ दीपावली की पूजन करनी है उस स्थान को शुद्ध करें, शास्त्र की चौकी के दाहिने ओर घी का दीपक जलाएँ, बांई ओर धूप का घट रक्खें व शुद्ध धूप का प्रयोग करें, मुखिया सर्वप्रथम शुद्धि कर सबको तिलक लगाएं।

दीपावली व नई बही मुहूर्त की सामग्री

धुली हुई अष्ट द्रव्य – (जल, चन्दन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल) दीपक, धूपदान, पीली सरसों, श्रीफल, नई थाली, मंगल कलश, शास्त्र चौकी, केशर घीसी हुई, मालाएँ आदि चौकी के ऊपर सुराँति लिखें, श्री महावीराय नमः तथा दुकान पर शुभ – लाभ लिखें।

ध्यान देने योग्य बातें

सर्वप्रथम मंगल कलश की (पाँच फल व सवा रुपया डालकर) स्थापना करें, शास्त्रों की स्थापना करें, दीप प्रज्जवलन करें, रक्षा सूत्र (सकलीकरण करें) बाँधें, थाली में द्रव्यादि सजाकर, परिवार के सभी लोगों को पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके शुद्ध मंगलाष्टक उच्चारण करें, अपने मित्र व्यवहार व रिश्तेदारों को पूजन में निमंत्रित करें, वाद्य आदि संगीत आदि से पूजा करें।

दीपावली पर वर्जित कार्य

1. धन – धातु की पूजा करना तीव्र मिथ्यात्व है।
2. जुआ खेलना, पटाखे बारूद चलाना तीव्र हिंसा है, धर्म नहीं।
3. रात्रि में मिष्ठान आदि खाना तीव्र राग है।
4. नये कपड़े खरीदना, नये बर्तन खरीदना, नया घर आदि खरीदना समीचीन् दीपावली नहीं है।
5. फोटो की पूजा नहीं करना चाहिए, आर्षमार्गी शास्त्रों की पूजा करना चाहिए।

पूजन विधि का क्रम

मंगलाष्टक पढ़ें, तत्पश्चात् सकलीकरण करें, मंगल कलश एवं शास्त्र आदि की स्थापना करें। विनय पाठ की अंतिम लाइनें (वंदों पाँचों परम गुरु सुरगुरु वंदत जास आदि)

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु –3 से स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः तक पढ़ें। श्री देवशास्त्र गुरु का अर्घ तत्पश्चात् गौतम गणधर जी की पूजा करके उसके बाद सरस्वती (जिनवाणी) की पूजा तत्पश्चात् सभी अर्घ महार्घ व शांति पाठ विसर्जन, उसके बाद सभी लोग खड़े होकर दीपक हाथ में लेकर जिनवाणी माँ की आरती करें, फिर नमोऽस्तु करें, तत्पश्चात् घर के छोटे लोग अपने से बड़ों के पैर छुएँ तत्पश्चात् थाल में दीपक लेकर मन्दिर जी की ओर जाकर भगवान की आरती करें और ध्यान चिन्तनादि करते हुए निद्रा लेवें।

मंगलाष्टक पढ़ते समय कुर्वन्तु नो मंगलम् कहते हुए सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें।

मंगलाष्टक स्तोत्र

अरहन्तो भगवंत इन्द्र - महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्त - सुपाठकाः मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत - रत्नप्रभा -
भास्वत्पाद - नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध - सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।। 1।।

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति - श्री - नगराधिनाथ - जिनपत्युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु नो मंगलम्।। 2।।

नाभेयादि - जिनाधिपास्त्रि - भुवनख्याताश्चतुर्विंशतिश्,
श्रीमन्तो भरतेश्वर प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रति विष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रि षष्टि पुरुषाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।3।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्री तीर्थंकर मातृकाश्च जनका, यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाधिपास्थितिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः, कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।4।।

ये सर्वौषधि ऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशला, येऽष्टौ विधाश्चारणाः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपि बलिनो, ये बुद्धि ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।5।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेद शैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्त शिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्ध विभवाः, कुर्वन्तु नो मंगलम् ।।6।।

ज्योतिर्व्यन्तर - भावनामरगृहे मेरौ - कुलाद्रौस्तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा, वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।7 ।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर प्रवेश महिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।8 ।।

इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषात्।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च, सुजनै-र्धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि।।9।।

।।इति मंगलाष्टकम्।।

शुद्धि मंत्र

जल से शुद्धि करें

शोधये सर्व पात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा पवित्रतर जलं शुद्धिं करोमीति स्वाहा

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृत वर्षणे अमृत स्रावय स्रावय
सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठःठः Îha स्वाहा।

चन्दन लगाने का मंत्र

ॐ ह्रां. ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वांग शुद्धिं कुरु - कुरु स्वाहा।

रक्षा मंत्र

ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटं-किरिटं घातय-घातय पर विघ्नान् स्फोटय-स्फोटय सहस्र खण्डान्
कुरु-कुरु पर मुद्रां छिन्द-छिन्द, पर मन्त्रान् भिन्द-भिन्द क्षां क्षः वाः वाः ह्रूं फट् स्वाहा।
(स्वयं के ऊपर पुष्प क्षेपण करें।)

हाथ में रक्षा सूत्र बांधें

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

रक्षासूत्र बंधन मंत्र

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्।।

दिग्बन्धन मन्त्र

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशातः समागतविघ्नान् निवारय - निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा

(बन्द मुट्ठी से पूर्व दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशातः समागतविघ्नान् निवारय - निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्ठी से दक्षिण दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशातः समागतविघ्नान् निवारय - निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्ठी से पश्चिम दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशातः समागतविघ्नान् निवारय - निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्ठी से उत्तर दिशा में पुष्प क्षेपण करें।)

ॐ ह्रः णमो लोए सव्व साहूणं ह्रः सर्व दिशातः समागतविघ्नान् निवारय - निवारय एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष Îwa फट् स्वाहा।

(बन्द मुट्ठी से सर्व दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें।)

शान्ति मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोष - कल्मषाय दिव्य-तेजो मूर्तये श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व - रोगापमृत्यु - विनाशनाय सर्व परकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व - क्षामडामर - विनाशनाय ॐ ह्रां. ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्व शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु - कुरु स्वाहा।

(विश्वशान्ति की कामना के साथ सभी दिशाओं में पुष्प क्षेपण करें।)

मंगल कलश स्थापना मंत्र

(पीले चावल से स्वास्तिक बनाकर मंगल कलश की यह मंत्र पढ़ते हुए स्थापना करें)

ॐ Îha आद्यानामाद्ये मध्यलोके, जम्बूद्वीपे, भरत क्षेत्रे, आर्यखण्डे भारत देशे.. .... प्रदेश जिले..... नगरे .... मासे .... पक्षे अमावस्यां, संध्याकाले गौतम गणधर पूजायां भूमि शुद्ध्यर्थं, पात्र शुद्ध्यर्थं, शान्त्यर्थं, पुण्य संचयार्थं, केवल ज्ञान प्राप्तयर्थं, नवरत्न, गंध पुष्पाक्षत श्री फलादि शोभितं शुद्ध प्रासुक जल प्रपूरितं मंगल कलश स्थापनं करोमि।

दीप प्रज्जवलन मंत्र

ॐ Îha कार्तिक कृष्णं अमावस्यां मोहतिमिर विनाशनाय दीप प्रज्जवलन करोमि

शास्त्र स्थापना मंत्र

ॐ Îha श्री जिनमुखोद्‌भव सरस्वती देव्यैः स्थापनं करोमि।

विनय पाठ

वन्दो पाँचौं परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघ्नहरण मंगल करन, पूरन परम प्रकाश।।1।।
चौबीसों जिनपद नमो, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधुनमि, रच्यो पाठ सुखदाय ।।2।।
मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान् ।।3।।
मंगल जिनवर पद नमो, मंगल अर्हत् देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव ।। 4।।
मंगल अचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन वच काय ।।5।।
मंगल सरस्वति मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म ।।6।।
या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
मंगल ''नाथूराम'' यह, भवसागर दृढ़ पोत ।।7।।

ॐ जय जय जय! नमोऽस्तु नमोस्तु नमोऽस्तु
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आईरियाणं,
णमो उवज्झायणं, णमो लोए सव्व साहूणं ।।1।।

ॐ Îha अनादि - मूल - मन्त्रेभ्यो नमः । (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं
केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा।
सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णतो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वजामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णतं
धम्मं सरणं पव्वज्जामि।ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि क्षिपेत्)

मंगल विधान

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।
अपराजित मन्त्रोऽयं, सर्वविघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।
एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलम्।।4।।
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पंच कल्याण का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याण-महं यजे।।

¬ Îha श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।

¬ Îha श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति. स्वाहा।

जिन सहस्रनाम का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे।।

¬ Îha श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्रीमज्जिनेन्द्र – मभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद–नायक–मनंत–चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ–सुदृशां सुकृतैक हेतुर्,
जैनेन्द्र–यज्ञ–विधिरेष मयाभ्यधायि।। 1।।

स्वस्ति त्रिलोक–गुरवे जिन–पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव–महिमोदय–सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश–सहजोर्ज्जित–दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न–ललिताद्भुत–वैभवाय।। 2।।

स्वस्त्युच्छलद्विमल–बोध–सुधा–प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव–परभाव–विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक–विततैक–चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल–सकलायत–विस्तृताय।।3।।

द्रव्यस्य शुद्धि–मधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि–मधिकामधि–गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ–यज्ञ–पुरुषस्य करोमि यज्ञं।। 4।।

अर्हत्पुराण–पुरुषोत्तम–पावनानि,
वस्तून्यनून – मखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद् विमल केवल बोध वह्नौ,
पुण्यं समग्र–महमेकमना जुहोमि।। 5।।

¬ Ïhं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।।

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधानम्।
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

परमर्षि उपासना

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। 1।।
कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 2।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि ।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 3।।
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धा दश सर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 4।।
जंघानल-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च,-स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।।5।।
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 6।।
सकाम-रूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्य-मन्तर्द्धि-मथाप्ति-माप्ताः।
तथाप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ।। 8।।
आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी - र्विषाविषा - दृष्टि - विषाविषाश्च।
सखेल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।9।।
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतोऽमधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।। 10।।

(इति पुष्पांजलिं क्षिपामि) कायोत्सर्गं करोम्यहम्

देव-शास्त्र-गुरु का अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूँ,
वर धूप निर्मल फल विविध बहु जनम के पातक हरूँ।
यह भाँति अर्घ चढ़ाय नित भवि करत शिव पंकति मचूँ,
अरहंत-श्रुत सिद्धान्त-गुरु निरग्रन्थ नित पूजा रचूँ।।
आठों दुखदानी, आठ निशानी, तुम ढिंग आनि निवारन हो।
दीनन निस्तारन, अधम उधारन, द्यानत तारन कारन हो ।।प्रभु.।।
प्रभु अंतरयामी त्रिभुवन नामी सबके स्वामीदोष हरो।
मेरी अरज सुनीजै ढील न कीजै न्याय करी जै प्रभु दया करो ।।

दोहा-
वसु विधि अरघ संजोय के, अति उछाह मनकीन।
जासों पूजों परम पद, देव-शास्त्र-गुरु तीन।।

¬ Îha श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गौतम स्वामी पूजन

रचयिता : उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

टीकमगढ़ 1995

कार्तिक कृष्ण अमावस तिथि को, संध्या बेला हुई सुवास,
शुक्ल ध्यान में थिरता पाकर, परम प्रभु का पाया आभास।
लीन हुए निज शुद्धातम में, ज्ञानावरण मोह का नाश,
अंतरायऔ दर्शनावरण, मैंट दिये पा सत् विश्वास।। 1 ।।

गणपति – गणनायक गणस्वामी, गौतम गणधर जिनके नाम,
इन्द्रभूति से मुनि बन जिनने, पाया निज में केवल ज्ञान।
चार घातिया कर्म नशाये, सुख-दर्शन-बुध-शक्ति अपार,
हृदय बुलाऊँ स्थापन करके, चरण नमूँ मैं बारम्बार ।। 2 ।।

ॐ Îha श्री गौतम स्वामिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वानम् ।
ॐ Îha श्री गौतम स्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ Îha श्री गौतम स्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम् ।
(पुष्पांजलि क्षिपामि)

जल

स्वर्गों के इन्द्रों ने गाये उर से गौतम के गुणगान,
दिव्य नीर की धारा देकर, अंतरमल का मैंटा नाम।
क्षीरोदधि का प्रासुक जल ले, गौतम प्रभु के चरण धरूँ ।
मन पवित्र हो निर्मल जल सा, तेरे जैसे भाव करूँ।

ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

वीर प्रभु को अर्पण होकर, मैंट दिया तुमने भव रोग,
दृष्टी पाकर ताप हटाया, पाया तुमने चेतन भोग।
मलागिरि चन्दन को लेकर, चरण चढ़ाऊँ गौतम नाथ,
भव के ताप मिटैं सब मेरे जनम जनम हो तेरा साथ।

ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

भवसागर के ताप निवारे, वीर प्रभू गौतम जिननाथ,
रत्नत्रय को निज में पाकर, लीन हुए चेतन के साथ,
उत्तम तंदुल चरण चढ़ाकर, रत्नत्रय गुण पाऊँ तीन,
पावन परम यथार्थ भक्ति कर, प्रभु चरणों में रहूँ प्रवीन।।

ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

वीर प्रभु पद अति विनम्र हो, काम भाव सब छोड़ दिया,
दुर्लभ ब्रह्मचर्य निज पाकर, निज को निज से जोड़ लिया।
महाशक्तिमय गौतम भगवन कुसुम चरण में लाया हूँ।
ब्रह्मचर्य का भाव धरूँ, मैं यही भाव करि आया हूँ।
ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

ध्यान लगाया निज का जब ही, क्षुधारोग का किया विनाश,
परमौदारिक काया पायी, भूख प्यास का नहीं निवास।
लाडू घेवर थाल सजाकर, तेरे चरण करूँ अर्पन,
क्षुधा निवारण करने प्रभुवर तुमको बारम्बार नमन्।
ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

उद्यम करके ज्ञान ज्योति पा, अंतर बाहर किया प्रकाश,
मोह तिमिर सब घाति कर्म का, सम्यक् बुध से किया विनाश।
ज्योति कपूर जले शुभ जगमग, स्व - पर प्रकाशक देती बोध,
गौतम प्रभु के चरण चढ़ाऊँ, भक्ती उर का करती शोध।
ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

उत्तम ध्यान लगाकर तुमने, आठ करम का नाश किया,
आठ गुणों को निज में पाकर, शाश्वत सुख आनन्द लिया।
धूप दशांग अग्नि में देकर, मल सब धोने आया हूँ,
गौतम प्रभु का ध्यान लगाकर धूप चढ़ाने आया हूँ।
ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

योग रोककर तन को छोड़ा, शुक्ल ध्यान करि शिव पाया,
शुद्ध स्वपद को पाने वाले, चेतनता को अपनाया।
गौतम स्वामी के युग पद में, उत्तम फल मैं लाया हूँ,
शाश्वत सुख हो हमको भगवन्, शिव पद पाने आया हूँ।
ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ

जल फल आठों द्रव्य सजाकर चरण तुम्हारे मैं आया,
भव-भव के संताप मिटैं मम, इसीलिए तुमको गाया।
अष्टम वसुधा पाने प्रभुवर, अष्ट दरब को धरूँ चरन,
गौतम प्रभु जिनवाणी माँ को शत्-शत् बार विनम्र नमन।।
ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनि अर्घ

श्रावण शुक्ला एकम के दिन, वीर प्रभु तुमने पाये,
मान स्तम्भ देखकर तुमने, सम्यग्ज्ञान दरश पाये।
चारित पाकर प्रभु आपने चार ज्ञान का पाया सार,
गौतम गणधर हुए दिव्य ध्वनि, सुनकर किया सकल विस्तार।।
ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने दिव्यध्वनि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज में निज का ध्यान लगाकर, हुए स्वयं आतम में लीन,
सकल तत्त्व को निज में पाकर, दर्शज्ञान में हुए प्रवीन।
केवलज्ञान महासुखदायी, उसको करूँ विनम्र नमन,
दर्शन ज्ञान हृदय में पाने, हृदय प्रभु तुमको अर्पन।।
ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने केवलज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाल

ऐ जी दर्शन ज्ञान अनन्त सुख, और शक्ति अपरंपार,
आत्मन् चलो तो पूजन करि आवें।
ऐ जी पूजन की है अभिलाषा, बिन पूजन रहो न जाय, आत्मन ....।
ऐ जी गौतम स्वामी को जजूँ, औ पाने निज पद सार, आत्मन ....।
ऐ जी कृष्ण अमावस कार्तिकी, और बेला आई शाम, आत्मन ....।
ऐ जी पाया केवल ज्ञान शुभ, और अल्प करूँ गुणगान, आत्मन ....।

पद्धरि छंद

जय परम देव आनन्द लीन, जय ज्ञायक श्रेय महा प्रवीन।
जय विघ्न विनाशक ज्ञान धाम, जय क्रोध विजयी नहिं रंचकाम।।
जय परम यती! हे परम योग! जय धीर सदा चैतन्य भोग।
जय परम तत्त्व्! हे परम संत! जय महामहिम! हे मुक्ति कन्त!
तुम ब्रह्मा विष्णु महेश बुद्ध, जय शुद्ध सिद्ध निर्मल विशुद्ध।
जय केवल बोध प्रदाता तुम, जय लोकालोक सुज्ञाता तुम।।
जय मोह विजय प्रभु जिन गौतम, दृग ज्ञानावरण मिटाया तम।
जय चिन्ता चिन्त विनाशक हो, जय तुम ही आनन्द शासक हो।।
जय दिव्य ध्वनि प्रकाशक हो, जय तुम ही दिव्य प्रकाशक हो।
जय अमृत रूप महाजल हो, जय तुम ही मोक्ष महाफल हो।।
तुम सहजानन्द स्वरूपी हो, जय नित्यानन्द अरूपी हो।
जय परम समाधि धारक हो, जय सम्यक् बोध प्रचारक हो।।
जय तीनों लोक विधायक हो, जय परम हृदय के लायक हो।
जय भेद ज्ञान अद्वैत तुम्हीं, जय विश्ववंद्य सब द्वैत हनी।।

त्रिभंगी छन्द

जय गौतम स्वामी, गणधर नामी, अन्तर्यामी शिवरामी।
जय गुण अभिरामी, त्रिभुवन स्वामी, सिद्ध जजामी सुखधामी।।
ॐ Îha श्री गौतम स्वामिने जयमालाये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

गौतम प्रभु के शुभ वचन, भाव सहित उर धार।
मन वच तन से पूजहूँ, नमहूँ बारम्बार।।
दीवाली के शाम को, पूजूँ पाने ज्ञान।
सम्यक् ज्ञान हृदय बसे, करूँ ''विनम्र'' प्रणाम।।

इत्याशीर्वाद
(पुष्पांजलि क्षिपामि)

सरस्वती पूजन

दोहा

जन्म जरा मृत्यु क्षय करै, हरै कुनय जड़रीति।
भव-सागर सों ले तिरै, पूजैं जिन वच प्रीति।।1।।
ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव - सरस्वतयैः पुष्पांजलिं क्षिपामि।

क्षीरोदधि गंगा विमल तरंगा, सलिल अभंगा, सुख संगा।
भरि कंचनझारी, धार निकारी, तृषा निवारी, हित चंगा।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञानमई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव - सरस्वती देव्यैः जलं निर्वपामीति स्वाहा।

करपूर मंगाया, चंदन आया केशर लाया संग भरी।
शारद-पद वंदों, मन अभिनन्दों, पापनिकंदों दाह भरी।।तीर्थं।।
ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव - सरस्वती देव्यैः चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखदास कमोदं, धारक मोदं, अति अनुमोदं चंदसमं।
बहु भक्ति बढ़ाई, कीरति गाई, होहु सहाई मात ममं ।तीर्थं.।।
ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव – सरस्वती देव्यैः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बहू फूल सुवासं, विमल प्रकाशं, आनंद रासं लाय धरे।
मम काम मिटायो, शील बढ़ायो, सुख उपजायो दोष हरे ।तीर्थं.।।
ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव – सरस्वती देव्यैः पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान बनाया, बहु घृत लाया, सब विध भाया मिष्ठ महा।
पूजूँ थुति गाऊँ प्रीति बढ़ाऊँ, क्षुधा नशाऊँ हर्ष लहा ।तीर्थं.।।
ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव – सरस्वती देव्यैः नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर दीपक जोतं, तमक्षय होतं, ज्योति उदोतं तुमहिं चढ़ै।
तुम हो परकाशक, भरम विनाशक हम घट भासक, ज्ञान बढ़ै ।तीर्थं.।।
ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव – सरस्वती देव्यैः दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभगंध दशों कर, पावक में धर, धूप मनोहर खेवत हैं।
सब पाप जलावे, पुण्य कमावे, दास कहावे सेवत है ।तीर्थं.।।
ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव – सरस्वती देव्यैः धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बादम छुहारी, लौंग सुपारी, श्रीफल भारी ल्यावत हैं।
मन वांछित दाता, मैंट असाता, तुम गुन माता गावत हैं ।तीर्थं.।।
ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव – सरस्वती देव्यैः फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नयनन सुखकारी, मृदु गुनधारी, उज्जवल भारी, मौल धरै।
शुभगंध सम्हारा, बसन निहारा, तुम तन धारा ज्ञान करै ।तीर्थं.।।
ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव – सरस्वती देव्यैः वेत्रासन निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत फूल चरु अरु दीप धूप अति फल लावै।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो गुण द्यानत सुख पावै ।तीर्थं.।।
ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव – सरस्वत्यैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाल

सोरठा

ओंकार ध्वनिसार, द्वादशांग विमल।
नमों भक्ति उर धार, ज्ञान करे जड़ता हरै ।।

पहलो आचारांग बखानो, पद अष्टादश सहस प्रमानो ।।
दुजो सूत्र कृतं अभिलाषं, पद छततीस सहस गुरु भाषं।
तीजो ठाना अंग सुजानं, सहस बयालीस पद सरधानं।
चौथे समयावांग निहारं, चौंसठ सहस लाख इक धारम्।।
पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति दरसं, दोय लाख अट्ठाइस सहसं।
छट्ठो ज्ञातकृथा विस्तारं, पाँच लाख छपपन हज्जारं।।
सप्तम उपासकाध्ययनंगं, सत्तर सहस ग्यारलख भंगं।
अष्टम अंतकृतं दस ईशं, सहस अठाइस लाख तेईसं।।
नवम् अनुत्तरदश सुविशालं, लाख बानवै सहस चवालं।
दशम प्रश्न व्याकरण विचारं, लाख तिरानव सोल हजारं।
ग्यारम सूत्र विपाक सु भाखं, एक कोड़ि चौरासी लाखं।
चार कोड़ि अरु पंद्रह लाखं, दो हजार सब पद गुरु शाखं।।
द्वादश दृष्टिवाद पन भेदं, इकसौ आठ कोड़ि पन वेदं।
अड़सठ लाख सहस छपपन हैं, सहित पंचपद मिथ्या हन हैं।।
इक सौ बारह कोड़ि बखानो, लाख तिरासी ऊपर जानो।
ठावन सहस पंच अधिकाने, द्वादश अंग सर्व पद माने।।
कोड़ि इकावन आठ हि लाखं, सहस चुरासी छह सौ भाखं।
साढ़े इक्कीस श्लोक बताये, एक एक पद के ये गाये।।

जा बानी के ज्ञान से सुझे लोकालोक ।
'द्यानत' जग जयवंत हो, सदा देत हूँ धोक

ॐ Îha श्री जिनमुखोद्भव - सरस्वतयै: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्यमान बीस तीर्थंकर का अर्घ

पंच विदेह सदा ही रहते, बीस तीर्थंकर प्रभू महान्,
सीमंधर युगमंधर आदि, प्यारे तीन लोक में नाम ।
जल फल आठों द्रव्य सजाकर अर्घ चढ़ाऊँ पाने धाम,
अष्टकर्म तज शिवपद पाऊँ, प्रभु पद मेरा नम्र प्रणाम ।।

ॐ Îha श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

श्री अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ

भवन ज्योतिषी व्यंतर वासी कल्पदेव में कहे विमान,
तीन लोक कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्यालय को करूँ प्रणाम ।
जल चंदन ले अष्ट दरब को थाल सजाकर लाया हूँ,
दुष्ट कर्म मम शांत करो मैं, अर्घ चढ़ाने आया हूँ ।।

ॐ Îha श्री कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिन बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

श्री सिद्ध प्रभु का अर्घ

निर्भय ! निर्मल ! निराकार ! हे शोक रहित ! निरहंकारी,
बंधरहित ! हे विश्वशांत ! है तुमको धोक सदा मेरी ।
जल गंधादिक अष्ट दरब से पूजूँ मैंटो आक्रंदन,
हे विशुद्ध ! हे सिद्ध ! प्रभु को शत-शत बार 'विनम्र' नमन् ।।

ॐ Îha श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

श्री आदिनाथ का अर्घ

आदि विधाता युगपत् ज्ञाता भविजन को तुम साता हो,
ज्ञान दिवाकर मोह प्रहारक दर्शन ज्ञान प्रदाता हो ।
करुणावारिधि तेरे चरणों, अष्ट दरब को लाया हूँ,
कर्म नाशकर मुक्ति दिलाओ, नमूँ आश करि आया हूँ ।।

ॐ Îha श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्री चन्द्रप्रभ का अर्घ

धवल वर्ण हे धवल! मनोहर धवल तुम्हारा चेतनवास,
दर्शन-ज्ञान-शक्ति-सुख नंत तेरा ध्यान महा विश्वास।
अष्ट दरब को चरण चढ़ाकर, धवल बनूँ पाने शिवधाम,
चन्द्रप्रभ के चरणकमल में मेरा बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री शांतिनाथ का अर्घ

कामदेव-चक्री-तीर्थंकर सुंदर रूप तुम्हारा है,
करुणाधारी - आनंदकारी, तेरी अंतर धारा है।
तीन लोक से वन्दनीय तुम मेरा अर्घ करो स्वीकार,
शांतिनाथ ! हे शांति प्रदाता ! तुमको वन्दूँ बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ का अर्घ

हे प्रभु ! तुमने ध्यान लगाकर जीत लिया उपसर्ग महान्,
तीन लोक से वंदनीय तुम सब प्राणी गाते गुणगान।
तेरी महिमा अद्‌भुत लगती अर्घ चढ़ाऊँ लेकर नाम,
पार्श्वनाथ दुःख दूर करो मम तुमको बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ

गणधर - हलधर - चक्रगदाधर - विद्याधर पूजैं मन लाय,
दुःख विनाशक ज्ञान प्रकाशक वंदन करत महासुख छाय।
अर्घ चढ़ाकर करूँ प्रार्थना अंतिम महावीर भगवान्।
नाश करो मेरे अघ सारे मेरा सौ - सौ बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री चौबीसी का अर्घ

कमलासन पर शोभित होते दर्शन ज्ञान लीन भगवान्,
जो भी तेरे गुण को गाते, वे पा जाते सम्यग् ज्ञान।
चौबीसों तीर्थंकर पद में अर्घ बनाकर लाया हूँ,
शत-शत बार विनम्र नमन कर गुण को पाने आया हूँ।।

ॐ Îha श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री का अर्घ

सूरज चाँद करें नित वन्दन तीर्थंकर के लघुनन्दन,
कुंदकुंद सा चारित जिनका पंचम युग के हैं भगवन्।
विद्या वारिधि ज्ञान दिवाकर चरणों अर्घ करूँ अर्पन,
गुरुवर विरागसागर पद में शत-शत बार विनम्र नमन्।।

ॐ Îwa परम पूज्य सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विनम्रसागर का अर्घ

पूजन की महिमा बतलाते भक्तामर का ज्ञान महान,
तत्त्व-द्रव्य का राज बताते जैन धरम की तुम हो शान।
हो विनम्र सत धर्म दिखाते हो विनम्र करता सम्मान,
गुरु विनम्र पद अर्घ चढ़ाऊँ, चरणों करूँ विनम्र प्रणाम।।

ॐ Î% प.पू. आचार्य श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी मुनिवरों का अर्घ

वीतरागमय लक्ष्य बनाया भाव सहित मुनि पद को धार,
लीन रहें निज आतम में नित छोड़ दिये संसार विचार।
मुनिवर तीन न्यून नवकोटि शिवपुर गामी कहे प्रधान,
अर्घ चढ़ाऊँ सब मुनियों को शत् - शत् बार विनम्र प्रणाम।।

ॐ Îha श्री त्र्यून नवकोटि मुनिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र का अर्घ

अष्ट करम को ध्यान अग्नि से नाश दिया, पाया निज सार,
अष्टापद – सम्मेदाचल – पावापुर – चंपापुर – गिरनार।
चौबीसों निर्वाण भूमि को अर्घ चढ़ाऊँ विनती धार,
नित प्रति वन्दूँ पावन थल को पाने निज में निज पद सार।।

ॐ Îha श्री चतुर्विंञशति तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

महार्घ

अर्हंत देव सदा मैं पूजूँ, सिद्ध प्रभु उर लाऊँ मैं,
चरणाचार्य धरूँ उवझाय, साधु पंच गुरु ध्याऊँ मैं।
जिनवाणी जो द्वादशांगमय अमृत जैसे हैं शुभ वैन,
पंचगुरू के दर्शन करके होते तृप्त हमारे नैन।।

षोडश भावन दशविध धर्म रत्नत्रय पूजूँ उर लाय,
अकृत्रिम – कृत्रिम चैत्यालय चैत्य जजूँ नित मन हर्षाय।
पंचमेरु–नन्दीश्वर देवालय में राजित जिन भगवान्,
हृदय धरूँ नित भावन वन्दूँ पाने अपना शिवपद धाम।।

सम्मेदाचल–अष्टापद – पावापुर – चम्पापुर – गिरनार,
बीस विदेह क्षेत्र प्रभु पूजूँ चौबीसों जिन लूँ उरधार।
जिनवर के बसु सहसनाम शुभ बहुविधि गाऊँ उनका सार,
सब मंगलदायी सुखकारी नमहूँ उर से बारम्बार।।

जल – गंधाक्षत–पुष्प–चरु–दीप–धूप–फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।

ॐ Îha श्री अर्हत् – सिद्ध–आचार्य– उपाध्याय– सर्वसाधुभ्यो, द्वादशांग जिनागमेभ्यो, दशलक्षण धर्मेभ्यो, षोडश कारणेभ्यो, सम्यग् दर्शन–ज्ञान–चारित्रेभ्यो, त्रिलोक स्थित कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो, नन्दीश्वर द्वीप स्थित द्विपंचाशत् जिन चैत्यालयेभ्यो पंचमेरु स्थित अशीति जिनचैत्यालयेभ्यो श्री सम्मेद– अष्टापद – ऊर्जयन्तगिरि – चम्पापुर – पावापुर आदि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो सातिशय क्षेत्रेभ्यो विद्यमान विंशति तीर्थङ्करेभ्यो अष्टाधिक जिन सहस्रनामेभ्यो, श्री वृषभादि चतुर्विन्शति तीर्थंकरेभ्यो जलादि महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति पाठ

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील - गुणव्रत-संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजे, निरखत नयन कमलदल लाजे।।
पन्चम चक्रवर्तिपद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शान्तिहित शान्ति विधायक।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी।।
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शान्ति दीजे हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को।।

बसन्ततिलका

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शान्ति सदा अनूप।।

इन्द्रवज्रा

सम्पूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजै सुखी हे जिन! शान्ति को दे।

स्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा,
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा।
होवे चोरी न जारी, सुसमय बरतैं हो न, दुष्काल मारी,
सारे ही देश धारैं, जिनवर-वृषको जो, सदा सौख्यकारी।।

घातिकर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

ॐ Îha श्रीमंतं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंञशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानामाद्ये-मध्यलोके - जम्बूद्वीपे - भरत क्षेत्रे - आर्य खण्डे - भारतदेशे.......... प्रदेशे..........जिले.......नगरे ....मासे......... पक्षे ....तिथि ....वासरे मुनि - आर्यिका -श्रावक/श्राविका जो जिनवाणी के सामने शांतिधारा देवें देखें ताके कर्मन की क्षय।

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का,
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ,
तो लौं सेऊँ, चरण जिन के, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ।।

आर्या छन्द

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहों प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा करि, पुनि छुड़ाहु भवदुख से।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

कायोत्सर्गं करोम्यहम्
(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

विसर्जन पाठ भाषा

बिन जाने व जानके रही टूट जो कोय।
तुम प्रसादतैं परम गुरु सो सब पूरन होय।।1।।

पूजन विधि जानूँ नहीं नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं क्षमा करहुँ भगवान्

मन्त्रहीन धनहीन हूँ क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहुँ राखहुँ मुझे देहु चरण की सेव

आये जो जो देवगण, पूजैं भक्ति प्रमाण।
ते सब जाबहुँ कृपाकर, अपने अपने थान।।

जिनवाणी की आशिका, लीजै शीश चढ़ाय।
भव भव के पातक कटैं, दुःख दूर हो जाय।।

कायोत्सर्गं करोम्यहम्
(कायोत्सर्ग करके शास्त्र जी को प्रणाम करें।)

जिनवाणी आरती

माता! तू दया करके, कर्मों से छुड़ा देना।
इतनी सी विनय तुमसे, चरणों में जगह देना।।

माता! आज मैं भटका हूँ, माया के अँधेरे में।
कोई नहिं मेरा है, इस कर्म के रेले में।।
कोई नहीं मेरा है, तुम धीर बँधा देना।
इतनी सी .... (1)

जीवन के चौराहे पर, मैं सोच रहा कब से।
जाऊँ तो किधर जाऊँ, यह पूछ रहा कब से।।
पथ भूल गया हूँ मैं, तुम राह दिखा देना।
इतनी सी .... (2)

लाखों को उबारा है, मुझको भी उबारो तुम।
मँझधार में है नैया, उसको भी तिरा दो तुम।।
मँझधार में अटका हूँ, मुझे पार लगा देना।
इतनी सी .... (3)

जा वाणी के ज्ञान तैं, सूझे लोकालोक।
सो वाणी मस्तक चढ़ौ, देत सदा हूँ धोक।।

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें तत्पश्चात् जिनवाणी माँ को नमस्कार गवासन से करें)

नोट :- आरती करने के बाद सभी लोग अपने से बड़ों के चरण छुएँ तत्पश्चात् थाली में दीपक ले जाकर मन्दिर जी में जायें, वहाँ पर केवल ज्ञान की आरती करें, उसके बाद चिंतनादि करके लोक व्यवहार निभाएँ तत्पश्चात् निद्रा लेवें।

(इति दीपावली पूजा समाप्तम्)

भजन

भजले प्रभु का नाम बाबा भजले प्रभु का नाम।

भजले प्रभु का नाम बाबा भजले प्रभु का नाम।
तब ही हो कल्याण बाबा तब ही हो कल्याण ।।टेक।।
भजले प्रभु ....

बड़े जनों का आदर करके आदर्शों को अपनाओ।
सच्चे गुरुओं को पा करके शीश झुकाकर गुणगाओ।
पाओगे सम्मान बाबा पाओगे सम्मान...... भजले प्रभु....

अंधकार में यत्न करोगे इक दीपक जल जायेगा।
अपने अंदर परमात्मा का रूप नजर तब आयेगा।
होगा सच्चा ज्ञान बाबा होगा सच्चा ज्ञान...भजले....

इन्द्रधनुष सा है धन वैभव क्षणभर में मिट जायेगा।
बिजली जैसा है ये – यौवन इकपल में ढल जायेगा।
क्यों तू करे गुमान बाबा क्यों तू करे गुमान...भजले....

अहंकार विषकुंभ तजो ये तन–मन करो 'विनम्र' यहाँ।
चंद दिनों का जीवन है ये ज्यादा अपनी उम्र कहाँ?
तज दे तू अभिमान बाबा तज दे तू अभिमान...भजले....

भजन

धीरे धीरे चलो जी मन्दिर

धीरे धीरे चलो जी मन्दिर, भगवन् के गुण गाने को।
बढ़ते चलो हजारों लोगो, वीतरागता पाने को ।।टेक।।
धीरे धीरे चलो ....

घर से मेरे भाव बने मैं, मन्दिर जी में जाऊँगा - 2
शांतिनाथ के दर्शन करके, मन ही मन हर्षाऊँगा - 2
पार्श्वनाथ के दर्शन करता - 2 पाप अनन्त मिटाने को।।1।।
बढ़ते चलो...........

भक्तिभाव से दर्शन करके, कूप से जल भर लाऊँगा - 2
दोनों हाथ में कलश को लेकर, भगवन् को नहलाऊँगा - 2
ऐसा भव्य जीव ही करते - 2, अपने दुःख मिटाने को।।2।।
बढ़ते चलो...........

थाल में अष्टद्रव्य को लेकर, पूजन विधि को रचाऊँगा - 2
भगवन् के गुण पाने को मैं, पूजन में गुण गाऊँगा - 2
देव-शास्त्र-गुरु पूजन करता - 2, रत्नत्रय गुण पाने को।।3।।
बढ़ते चलो...........

हे प्रभु ! आप तो केवलज्ञानी, तीनों लोक विजेता हो - 2
हे प्रभु ! आप तो सिद्ध स्वरूपी, मुक्तिपथ के नेता हो - 2
मेरा मुझसे मिलन करा दो, मंजिल अपनी पाने को।।4।।
बढ़ते चलो...........

हे प्रभु ! चरण कमल द्वय तेरे, मेरे हृदय रहें पल-पल - 2
मुक्ति न पालूँ तब तक भगवन् कर दूँ नाश करम दल-मल -2
सम्यक् बोध खिला दो उर में, मरण समाधि पाने को ।।5।।
बढ़ते चलो...........

कविवर
उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

भजन

मंत्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा

मंत्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा।
ये है वो जहाज, ऽऽऽ जिसने लाखों को तारा।।
मंत्र णमोकार................

अरिहन्तों को नमन हमारे, अशुभ करम अरि हनन करें – 2
सिद्धों के सुमिरन से आत्मा, ऊर्ध्व लोक को गमन करे – 2
भव – भव में – ऽऽऽ ओ ओ नहिं रुले दुबारा,
मंत्र णमोकार................

जिनको पंचाचार है प्यारा, उनका हम गुणगान करें – 2
शिक्षा देकर गुरुवर सूरि, भविजन का कल्याण करें – 2
ध्यान करूँ – ऽऽऽ ओ ओ हो नमन हमारा,
मंत्र णमोकार................

हँसते–गाते सोते–जगते, इसी मंत्र का जाप करो – 2
पाप हटाओ पुण्य बढ़ाओ, जिनवर का गुणगान करो – 2
मंत्र यही – ऽऽऽ ओ ओ यहाँ बने सहारा,
मंत्र णमोकार................

भजन

मैं चंदन बनकर तेरे चरणों में

मैं चंदन बनकर तेरे चरणों में लग जाऊँ।
मैं फूल बनकर तेरे चरणों में चढ़ जाऊँ।।

तुमने हमको राह दिखाई, माता पिता हो तुम हो भाई
सबको तुमने पार लगाया, अब है मेरी बारी आई
मैं नाव तुम्हारी बैंठूँ, साहिल को पा जाऊँ - ऽऽऽ

मैं चंदन बनकर तेरे चरणों में.........

जिनकी चर्या धरम निशानी, मुख से निकले निर्मल वाणी
जिनके आदर्शों पे चलकर, जग से तिरते लाखों प्राणी
उन गुरु को ध्येय बनाकर मैं ध्याता बन जाऊँ - ऽऽऽ

मैं चंदन बनकर तेरे चरणों में.........

तू मिलता तो सब मिल जाता, तेरे गुण को कौन न गाता
वो ही अपना भाग्य बनाता, जो चरणों में शीश झुकाता
मैं शीश झुकाकर चरणों में तेरे आ जाऊँ - ऽऽऽ
मैं चंदन बनकर तेरे चरणों में.........

तेरे दर पे आये सवाली, उसकी भरती झोली खाली
महिमा तेरी अजब निराली, भक्ति तेरी है गुण वाली
मैं गीत तुम्हारे गाकर, पूजन में रम जाऊँ - ऽऽऽ
मैं चंदन बनकर तेरे चरणों में.........

नोट :- इस सुराँति को दीपक
जलाने वाली चौकी पर बनाते हैं।

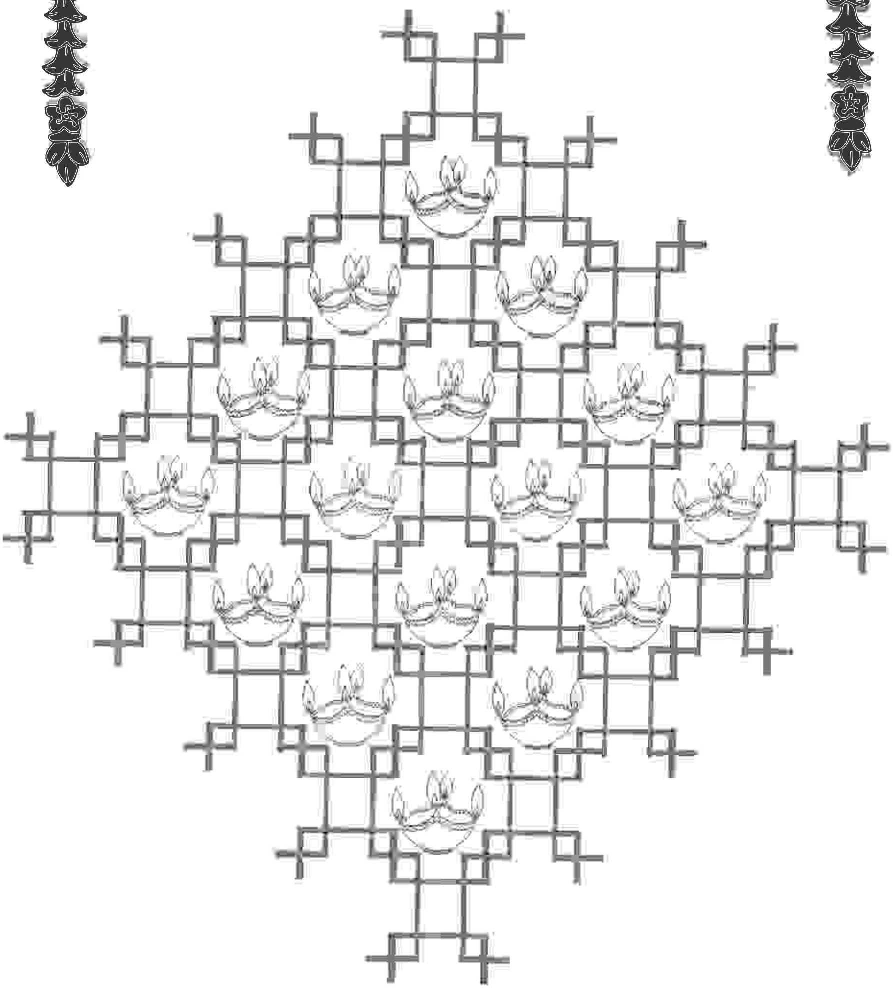

।।श्री महावीराय नमः।।

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री

बही बनाने का मंत्र

बही में केसर से साथिया बनाकर एक - एक कोरा पान रखें और निम्न प्रकार लिखें -

शुभ 卐 लाभ

श्री ऋषभदेवाय नमः श्री महावीराय नमः

श्री गौतम गणधराय नमः श्री केवलज्ञान- लक्ष्म्यै नमः

श्री शुभ मिति कार्तिक कृष्णा अमावस्या वीर नि0 संवत 25.......विक्रम सं. ..... दिनांक..........मास.......सन् 200...ई. .....वार को श्री (दुकान मालिक का नाम) ....की ;प्रतिष्ठान का नामद्ध .... की दुकान की बही का शुभ मुहूर्त किया। यह हो जाने के बाद विधि कराने वाले, दुकान के प्रमुख सज्जन को बही हाथ में देवें और पुष्प क्षेपण करें।